International Journal of Education and Science Research

Review

Volume-1, Issue-1 Feburary-2014 ISSN: 2348- 6457

प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षको की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति तथा कक्षा–शिक्षण व्यवहार का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 अरूण कुमार पाण्डेय
हंडिया पी0जी0 कालेज हंडिया
इलाहाबाद

प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसा व्यापक शब्द है जिसे अनादिकाल से आज तक मानव का विद्वत समाज परिभाषित करने का प्रयास करता चला आ रहा है। किसी विद्वान ने कहा है कि एक विद्यालय खुलवाने से कई जेलों में ताला लग सकता है अर्थात् शिक्षा की व्यापक प्रक्रिया के अन्तर्गत मानवीय सभ्यता के उत्तरोत्तर विकास का परिसीमन हो सकता है।कहा जाता है कि हर राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता तथा मौलिक सम्पदा शिक्षण संस्थाओं में देखी जा सकती है। इस सम्पदा को हम कितनी दृढ़ता एवं जिम्मेदारी से इसे सुरक्षित रखते है, ये हमारी अपनी व्यवस्था है। शिक्षक को राष्ट्र निर्माता माना गया है, क्योंकि एक शिक्षक अपने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष व्यावहारिक शिक्षण कर राष्ट्र के विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित आदर्श व्यक्तित्व एवं शिक्षक व्यवसाय को एक आदर्श व्यवसाय की संज्ञा दी गयी है। यह एक लग बात है कि एक शिक्षक सम्बन्धित सामाजिक मानको को कहा तक पूरा करता है। क्या आज का शिक्षण एक व्यवसाय मात्र रह गया है या इसमें और भी कुछ तत्व निहीत है ? इसी तत्व की समीक्षा की महती आवश्यकता है शिक्षण की प्रक्रिया सामाजिक निर्माण एवं समाज के हित के लिए एक बड़ी सेवा है। परन्तु क्या शिक्षक सेव का भाव लेकर शिक्षण कार्य करते है या अभिष्ट लक्ष्य प्राप्त नही हो पाने की दशा में मजबूरी में जीवन निर्वाह के लिए इस व्यवसाय को अपनाये हुये है। स्पष्ट है कि ऐसा शिक्षक शिक्षण कार्य तो कर सकते है पर शिक्षण के प्रमुख उद्देश्यों को पूरा नही कर पायेगें। ऐसे शिक्षकों का चयन जो कक्षागत परिस्थितियों में प्रभावशाली शिक्षण करते है तथा अपने उद्देश्यों को पूरा करते है उनके द्वारा किये गये कार्यो की समीक्षा करके उनका विश्लेषण किया जा सकता है कक्षागत शिक्षण के दौरान होने वाली शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का परिणाम इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक कक्षा की सामाजिक एवं सांवेगिक वातावरण पर किस प्रकार का अधिकार रखता है और अपने शिक्षण कार्य को किस प्रकार से समायोजित करता है। यहॉ पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि, यदि ऐसे शिक्षको का चयन हो जाय जो अपनी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को उद्देश्यों के अनुरूप संचालित कर लेते है तो उनके कार्य तथा शिक्षण विधियों का

चयन करके शिक्षण प्रक्रिया को और अधिक समुन्नत बनाया जा सकता है तथा साथ ही साथ ऐसे शिक्षको का भी चयन आवश्यक है जिनका कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नकारात्मक प्रभाव है। निश्चय ही इस बात से प्रभावित होकर विगत शोध अध्ययनों से यह जानने का प्रयास किया गया है कि प्रभावशाली शिक्षक के लिये शिक्षक में कौन–कौन सा गुण होना आवश्यक है। क्योंकि कहा गया कि शिक्षक जन्मजात कलाकार होते है और ऐसे सफल शिक्षको का चयन निश्चित ही आवश्यक है। ऐसे शिक्षको की पहचान हो जाती है तो निश्चित ही छात्रों का उपलब्धि स्तर बढ़ सकता है और राष्ट्र के विकास में समुचित योगदान हो सकता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ऐसे व्यक्तित्व वाले शिक्षक जो प्रभावशाली शिक्षण नही कर पाते है इस प्रकार का अध्ययन भी आवश्यक है। एक प्रभावशाली शिक्षण के लिए एक कुशल–शिक्षक को मानकीकृत शिक्षण विधियों के साथ–साथ एक ऐसे नैसर्गिक विश्वास व्यवसाय को जोड़ना आवश्यक है। जिसमें कि एक नैष्ठिक समाज का निर्माण हो जाये इसके लिये यह अत्यन्त ावश्यक है ाकिइस तथ्य का अध्ययन किया जाय कि शिक्षक की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का विकास किन परिस्थितियों में हो रहा है, तथा सम्बन्धित परिस्थिति को संज्ञापित करने के लिए वह कैसा कक्षा शिक्षण व्यवहार करता है। एक शिक्षक के इन सभी घटको का चयन हो जाने के पश्चात निश्चित ही शिक्षण अधिगम–प्रक्रिया को उचित दिशा मिल सकती है। इन सभी बातो को ध्यान में रखते हुए कि शिक्षको की व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं कक्षागत शिक्षण व्यवहार का सम्बन्ध कहा तक किया जा सकता है? इसके अतिरिक्त प्राथमिक शिक्षको की निम्न अभिवृत्ति वाले शिक्षक एवं उच्च अभिवृत्ति वाले शिक्षको के शिक्षण व्यवहार का मापन करने की आवश्यकता है।

समस्याः–

प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षको की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार का समीक्षात्मक अध्ययन

रीवॉ जिले के विशेष सन्दर्भ में

शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण–

1. **प्राथमिक विद्यालय–** ऐसे विद्यालय जहां कक्षा 1 से 5 तक के छात्र–छात्राएं अध्ययन करते है।
2. **शिक्षण व्यवसाय–** यहां पर शिक्षण व्यवसाय का आशय कक्षा 1 से 5 तक की कक्षाों में शिक्षण कार्य करने वाले शिक्षको से है।
3. **अभिवृत्ति–** व्यक्ति के मनोभावों अथवा पूर्व विश्वास क्या है? अभिवृत्ति से अभिप्राय व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है, जिसके कारण वह विद्यालय में कक्षा शिक्षण कार्य के दौरान परिस्थितियों पाठ्यक्रमों ादि के प्रति विशेष

प्रकार का व्यवहार करता है। दूसरे शब्दों में अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व की वे प्रवृत्तियां है, जो उसे किसी छात्र के सम्बन्ध में किसी विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करने का निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है। अर्थात् शिक्षक का अपना निजी दृष्टिकोण अथवा विचार जो उसकी शिक्षण प्रक्रिया निर्देशित करना है।

4. **कक्षा–शिक्षण व्यवहार–** ऐसा व्यवहार जो शिक्षक के द्वारा कक्षा–शिक्षण के दौरान विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न सन्दर्भो के लिए प्रदर्शित किया जाय। शिक्षण प्रक्रिया के द्वारा छात्रों में वांछित व्यवहार कहा जाता है और ऐसा शिक्षक द्वारा कक्षा में किया जाय उसे कक्षा–शिक्षण व्यवहार कहा जाता है।

आवश्यकता एवं महत्वः–

विगत समय में शिक्षा अध्यापक केन्द्रित थी, जिसमें शिक्षक पूर्णरूप से अपने विचारों मूल्यों को– विद्यार्थियों पर थोप देता था परन्तु अब छात्रों के केन्द्रित है, यह सर्वसम्मति से स्वीकार किया जा चुका है कि छात्र का सर्वांगीण विकास करना ही अध्ययन एवं अध्यापक प्रक्रिया की मुख्य कड़ी है। इस कड़ी के अन्तर्गत यह माना गया कि छात्र ही एक ऐसा संसाधन है जिसके चारों तरफ एक राष्ट्र के विकास का सीधा सम्बन्ध है। आधुनिक समय में शिक्षण समस्याओं में प्रमुख समस्या–शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का स्तर गिरना एवं विद्यार्थियों में अनुशासनात्मक मूल्यों का धराशायी होना तथा शिक्षण संस्थाओं की अव्यवस्था को निश्चित रूप से देखा जा सकता है। ये समस्याएं इतनी घटिया तथा बहुआयामी हो चुकी है कि इसके साथ–साथ अध्ययन करने के लिए विस्तृत स्तर पर संसाधनों की आवश्यकता है प्रमुख शैक्षिक समस्याओं का अलग–अलग क्षेत्रों में विभाजित करके उनका ध्ययन किया जाना चाहिए और इस प्रकार से सकारात्मक परिणाम मिल सकते है। शिक्षण कार्य के अन्तर्गत शिक्षको में कुछ ऐसी बाते या तथ्य समाहित होते है जिसके कारण छात्रों को अधिगम होने में कठिनाई होती है बालक के विकास के लिए शिक्षक व्यवहार का मूल्यांकन एवं अअवलोकन करके शिक्षको के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सकता है। शिक्षा मनोविज्ञान रेयान ने कहा है कि ''जन समान्य तथा व्यावसायिक क्षेत्रों में यह धारणा काफी महत्वपूर्ण बन गई है कि कोई भी शैक्षिक कार्यक्रम तभी सफल है जब विद्यालय का समुचित अध्ययन किया जाय'' शिक्षक के व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं शिक्षण अभिवृत्ति तथा कक्षा–शिक्षण अन्तःक्रिया व्यवहार के बीच सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए पिछले वर्षो में शोध कार्य होते रहे है वर्तमान स्थिति में शिक्षक व्यक्तित्व को अधिक से प्रभावशाली बनाने की विधियों पर कार्य करने की आवश्यकता है (डीविस 1961) विगत समय में किये गये नुसंधान कार्यो से भी शिक्षक के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार के मध्य स्पष्ट सम्बन्ध नही ज्ञात हा सका है। अतः उपर्युक्त समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में अनुसंधान कर्ता ने शिक्षक की अभिवृत्ति तथा उनके कक्षा शिक्षण अन्तक्रिया को शोध का लक्ष्य मानते हुये और अधिक वैज्ञानिक हल खोजने का प्रयास किया है।

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-1, Issue-1 Feburary ISSN: 2348- 6457

शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्यः–

प्राथमिक विद्यालयों में महिला शिक्षको एवं पुरूष शिक्षको के बीच शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर ज्ञात करना–

(क)– शहरी क्षेत्र के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर ज्ञात करना।

(ख)– ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर ज्ञात करना।

(ग)– शहरी क्षेत्र के अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर ज्ञात करना।

(घ)– ग्रामीण क्षेत्र के अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर ज्ञात करना।

प्राथमिक विद्यालयों के महिला शिक्षको एवं पुरूष शिक्षको के बीच कक्षा–शिक्षण अंतःक्रिया चर पर अन्तर ज्ञात करना–

(क)– शहरी क्षेत्र के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच कक्षा–शिक्षण अंतःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) पर अन्तर ज्ञात करना।

(ख)– ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच कक्षा–शिक्षण अंतःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) पर अन्तर ज्ञात करना।

(ग)– शहरी क्षेत्र के अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच कक्षा–शिक्षण अंतःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) पर अन्तर ज्ञात करना।

(घ)– ग्रामीण क्षेत्र के अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच कक्षा–शिक्षण अंतःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) पर अन्तर ज्ञात करना।

प्राथमिक विद्यालयों में महिला शिक्षक का पुरूष शिक्षको के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं कक्षा–शिक्षण अंतःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) में सार्थक सम्बन्ध ज्ञात करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना– उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया–

(क)– शहरी क्षेत्र के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।

(ख)– ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।

(ग)– शहरी क्षेत्र के अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।

(घ)– ग्रामीण क्षेत्र के अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।

(क)– शहरी क्षेत्र के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच कक्षा–शिक्षण अंतःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) पर सार्थक अन्तर नही है।

(ख)– ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच कक्षा–शिक्षण अंतःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) पर सार्थक अन्तर नही है।

(ग)– शहरी क्षेत्र के अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच कक्षा–शिक्षण अंतःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) पर सार्थक अन्तर नही है।

(घ)– ग्रामीण क्षेत्र के अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच कक्षा–शिक्षण अंतःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) पर सार्थक अन्तर नही है।

प्राथमिक विद्यालयों में महिला तथा पुरूष शिक्षको की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति तथा कक्षा–शिक्षण अन्तःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) में सार्थक सह सम्बन्ध नही है।

शोध कार्य विधिः–

अनुसंधान का सबसे महत्वपूर्ण कार्य ऑकड़ो का संग्रह है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उपर्युक्त उपकरणों का प्रशासन करना होगा। जन संख्या पर समान्यीकरण हेतु उपर्युक्त सांख्यिकीय प्रविध्यिों को निर्धारित किया जाना अनिवार्य समझाा जाता है। प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन हेतु प्रयुक्त कार्य विधियों का उल्लेख किया जाता है। अनुसंधान विधि के न्तर्गत आने वाली वर्णनात्मक शोध विधियों में घटनोत्तर अनुसंधान विधि (Expost Fecto Method) का प्रयोग करके शोध समस्या से सम्बन्धित चरो का आपस में परस्पर सम्बन्ध तथा एक दूसरे पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया हैः–

1. **अभिवृत्ति मापनी (T.A.I.)–** प्राथमिक विद्यालयों में महिला एवं पुरूष शिक्षको की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करने के लिए प्रस्तुत शोध कार्य में एस0पी0 अहलूवालिया द्वारा निर्मित टीचर एटीट्यूट इन्वेन्री **(T.A.I.)** का प्रयोग किया गया है। इस परिसूची में 90 कथन है इसकी रचना लिकर्ट मापनी के ाधार पर की गई है। यह शिक्षक के छः विभिन्न पहलुओं का मापन करती है जो निम्नलिखित है–

   (क) शिक्षक व्यवसाय

   (ख) कक्षा कक्ष शिक्षण

   (ग) छात्र केन्द्रित व्यवहार

   (घ) शैक्षिक प्रक्रिया

   (ङ) छात्रगण

   (च) अध्यापकगण

2. **फ्लैण्डर्स अन्तःक्रिया विश्लेषण वर्ग प्रणालीः–** प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक विद्यालयों में नियुक्त शिक्षकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार के निरीक्षण हेतु फ्लैण्डर्स अन्तःक्रिया विश्लेषण वर्ग प्रणाली का प्रयोग किया गया है।

   फ्लैण्डर्स ने इस प्रविधि में कक्षा में होने वाले शाब्दिक व्यवहारों का वर्गीकरण करने का प्रयास किया है सभी क्रियाों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है–

   1. शिक्षक कथन (1 से 7 वर्ग)
   2. छात्र कथन (8 से 9 वर्ग)
   3. मौन या विभ्रान्ति (10वॉ वर्ग)

फ्लैण्डर्स अन्तःक्रिया वर्ग प्रणाली विश्लेषण प्रक्रियाः–

1. **अंकन प्रक्रिया–** अंकन प्रक्रिया कें लिए निरीक्षक का ऐसे स्थान पर बैठना चाहिए जहॉ वह कक्षा में होने वार्ल सभी घटना या अनुक्रिया कों भॅली–भॉति देख सके। कक्षा में बैठने के पश्चात निरीक्षक यह निर्णय लेता है वि विशिष्ट घटना किस वर्ग में अंकित की जा सकती है।
2. **अंकन अर्थपन प्रक्रिया–** विभिन्न वर्गो की आवृति ज्ञात करने के लिए 10X10 की आवृति की रचना की जार्त है। इसकी सहायता से घटनाओं के क्रम में शिक्षण छात्र व्यवहार प्रभाव की व्याख्या की जाती है।

कक्षा शिक्षण अन्तःक्रिया चर– प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रमुख अन्तःक्रिया चरों का वर्णन निम्नलिखित है–

1. **शिक्षक वार्ता प्रतिशत (P.T.T.)–** कक्षा शिक्षण व्यवहार में शिक्षक की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होता है (P.T.T.) की गणना के लिए आव्यूह के 1 से 7 वर्गो की आवृत्तियों के योगफल में सभी वर्गो की आवृत्तियों क भाग दिया जाता है, तथा भागफल में 100 का गुणा किया जाता है।

$$\text{P.T.T.} = \frac{\text{1+2+3+4+5+6+7 वर्ग की आवृत्तियों का योग}}{\text{1 से लेकर 10 तक वर्ग की आवृत्तियों का योग}} \times 100$$

2. **अप्रत्यक्ष–प्रत्यक्ष शिक्षक व्यवहार (I/D अनुपात)–** शिक्षक के कक्षा में प्रत्यक्ष तथा प्रत्यक्ष व्यवहार के अनुपात का भी पता लगाना शोध कर्ताओं की परम्परा रही है। इस गणना के लिए 1 से 4 वर्गो के योग में 5 से 7 वर्गो के योग से भाग दिया जाता है।

$$\text{P.T.T.} = \frac{\text{1+2+3+4 वर्ग की आवृत्तियों का योग}}{\text{5+6+7 वर्ग की आवृत्तियों का योग}}$$

3. **शिक्षक अनुक्रिया अनुपात (T.R.R.)–** शिक्षक अनुक्रिया अनुपात द्वारा कक्षा में विद्यार्थियों के विचारों तथ उनकी अनुभूतियों पर अध्यापक की प्रतिक्रिया का संकेत मिलता है। शिक्षक अनुक्रिया अनुपात (T.R.R.) क मान ज्ञात करने के लिए 1, 2 तथा 3 वर्गो की आवृत्तियों के योगफल में 1, 2, 3, 6 तथा 7 वर्गो की आवृत्तिये का भाग दिया जाता है, और भागफल में 100 का गुणा किया जाता है अतः T.R.R. का मान निम्नलिखित सूत्र से ज्ञात किया जाता है–

$$\text{T.R.R.} = \frac{\text{(1+2+3) वर्ग की आवृत्तियों का योग}}{\text{(1+2+3+6+7) वर्ग की आवृत्तियों का योग}} \times 100$$

शोध क्षेत्र का परिसीमन– प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवॉ है, इसके अन्तर्गत 9 विकास खण्ड रीवॉ, रायपुर कर्चुलियान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्योंथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज है। इनके अन्तर्गत स्थित प्राथमिक शिक्षा स्तर (1से 8 तक) एवं जनपद खण्ड शिक्षा केन्द्र, जिला शिक्षा केन्द्र द्वारा किये जाने वाले कार्यक्रम इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मलित होगें। चूँकि रीवा जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिसके कारण सभी प्राथमिक स्तर के विद्यालय कुल 45 विद्यालयों का चयन दैव निर्देशन पद्धति द्वारा अध्ययन हित किया जायेगा। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा जायेगा कि सभी विकास खण्डों के विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके तथा ये सभी विद्यालय शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से सम्बन्धित हों।

न्यादर्श चयन–

प्रस्तुत समस्या को देखते हुए अध्ययन को प्रामाणी एवं कम खर्चीला तथा विश्वसनीय बनाने के लिए न्यादर्श की यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श में दिये गये कुल 200 प्राथमिक स्तर के शिक्षक लिये गये है, जिसमें की 100 महिला तथा 100 पुरूष शिक्षक है। 100 में से 50–50 शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से लिये गये है। तथा 50 में से 25–25 शिक्षक शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से लिये गये है। 25 में से 13 विज्ञान वर्ग एवं 12 कला वर्ग के शिक्षको का चयन किया गया है।

ऑकड़ों का संकलनः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित रूप में ऑकड़ों का संग्रह किया गया–

1. सर्वप्रथम न्यादर्श में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालयों में 100 शासकीय एवं 100 अशासकीय प्राथमिक स्तर के शिक्षको पर एस0पी0 अहलुवालिया द्वारा निर्मित टीचर एटीट्यूड इन्वेन्टरी (T.A.I) का प्रशासन प्राप्त किया गया। प्रशासन के उपरान्त उत्तर पत्र का अंकन करके सभी शिक्षको का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांक ज्ञात किया गया।
2. उपरोक्त प्रशासन के पश्चात अनुसंधानकर्ता ने न्यादर्श में सम्मिलित सभी शिक्षकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का निरीक्षण करने के लिए फ्लैण्डर्स अन्तःक्रिया वर्ग प्रणाली (F.I.A.C.S.) का प्रयोग किया गया।

प्रयुक्त सांख्यकीय विधियाँः–

1. प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरूष शिक्षको के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति तथा अन्तःक्रिया चरों पर ज्ञात करने के लिए CRपरीक्षण की गणना की गई है।

$$CR = \frac{M_2 \sim M_2}{\sqrt{\frac{\sigma^2}{N_1} + \frac{\sigma^2}{N_2}}}$$

2. पीयर्सन की आघूर्ण विधि द्वारा सह संबंध गुणांक की गणना P.T.T., I/D, T.R.R. की बीच की गई पीयर्सन की आघूर्ण विधि द्वारा सहसंबंध गुणांक (r) गणना के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया गया।

$$r = \frac{N\sum XY - \sum X \sum Y}{\sqrt{[(N\sum X^2 - (X^2)][N\sum Y^2 - (Y^2)]}}$$

परिणाम विश्लेषण और व्याख्याः—

शोधाथर्सी द्वारा शोध अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण अध्ययन में सम्मलित प्राथमिक शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में नियुक्त महिला एवं पुरूष शिक्षक पर एस0पी0 अहलूवालिया द्वारा निर्मित शिक्षक अभिवुत्ति मापनी व इन्हीं शिक्षको के निरीक्षित कक्षा—शिक्षण व्यवहार की सहायता से उनकी अलग—अलग आव्यूह (Matrix) रचना के उपरान्त उपयुक्त सूत्र का उपयोग करके अन्तःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) के मानो की गणना की गई इसके उपरान्त महिला एवं पुरूष शिक्षको के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं कक्षा शिक्षण अन्तःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) के प्राप्तांको का अलग—अलग मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया। इस गणना के पश्चात अन्तःक्रिया चरों पर अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए (CR) का परीक्षण का प्रयोग किया गया तथा अभिवृत्ति का अलग—लग अन्तःक्रिया चरों (P.T.T., I/D, T.R.R.) के साथ सह सम्बन्ध गुणांक ज्ञात किया गया।

संख्यकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणाम तथा परिकल्पनाओं के सत्यापन का विवरण निम्न प्रकार से है।

1. प्राथमिक विद्यालयों में महिला शिक्षक एवं पुरूष शिक्षको के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांक मे अन्तर।
2. प्राथमिक विद्यालयों में महिला शिक्षक एवं पुरूष शिक्षको के कक्षा—शिक्षण अन्तःक्रिया चरों (P.T.T., I/D, T.R.R.) पर अन्तर।
3. प्राथमिक विद्यालयों में महिला शिक्षक एवं पुरूष शिक्षको के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं कक्षा—शिक्षण अन्तःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) के बीच सहसम्बन्ध।

इस प्रकार परिकल्पाना संख्या 1 के उपविभागो 1(क), 1(ख), 1(ग), 1(घ) को सत्यापित करने के लिए प्रशासन एवं आँकड़ा संग्रह के पश्चात यह ज्ञात होता है कि ''प्राथमिक विद्यालयों महिला एवं पुरूष शिक्षको के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांक का मध्यमान एवं CR मान की गणना के पश्चात CR सारणी का अवलोकन करने पर यह

ज्ञात हुआ कि प्राप्त CR का मान 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। इस परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। इसक अर्थ यह है कि प्राथमिक विद्यालयों में महिला एवं पुरूष शिक्षको के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही होता है। जो मध्यमानों में अन्तर है वह संयोगवश है। इसका आशय यह है कि प्राथमिक विद्यालयों मे महिला एवं पुरूष शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति–अभिवृत्ति सकारात्मक है तथा वे शिक्षण कार्य में रूचि रखते है। इस प्रकार परिकल्पना संख्या 2 के उप विभागों 2(क), 2(ख), 2(ग) एवं 2(घ) को सत्यापित करने के लिए प्रशासन एवं आँकड़ा संग्रह के पश्चात यह प्राप्त होता है कि प्राप्त प्राप्तांक CR का मान 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अत इस परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि प्राथमिक विद्यालयों में महिला एवं पुरूष शिक्षको के शिक्षक अन्तःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) में सार्थक अन्तर नही होता है। उपराक्त कथनों क तात्पर्य है कि महिला शिक्षक एवं पुरूष शिक्षक के कक्षागत व्यवहार छात्रों की अनुभूतियों को स्वीकार करने, प्रशंस करने, छात्रों के विचारों को स्वीकार करने व्याख्या करने, निर्देश देने में काफी समानताएं है। परिकल्पना संख्या 3 के सत्यापित करने के लिये आँकड़ा संग्रह के उपरान्त सांख्यकीय विश्लेषण किया गया जिसमें प्राथमिक विद्यालय मे नियुक्त महिला एवं पुरूष शिक्षकां का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं कक्षा–शिक्षण अन्तःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) को लेकर सार्थक परीक्षण करने के लिये सह सम्बन्ध गुणांक सार्थकता सारिणी का अवलोकन किय गया। इसमें ज्ञात हु कि यह सम्बन्ध गुणांक 0.05 स्तर पर सार्थक नही अतः इस अध्ययन में ली गई परिकल्पन संख्या 3 में ''प्राथमिक विद्यालयों में महिला तथा पुरूष शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं कक्षा–शिक्षण अन्तःक्रिय चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) में सार्थक सहसम्बन्ध नही होता है। इसका तात्पर्य है कि शिक्षको द्वारा कक्षा में छात्रे की अनुभूतियों को स्वीकारने, प्रशंसा या प्रोत्साहन, व्याख्या प्रस्तुत करने, निर्देश देने तथा कक्षा में अधिकार प्रदर्शित करने शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति सार्थक रूप से सम्बन्धित नही है ऐसा प्रायः देखने में आता है कि शिक्षक द्वारा कक्षा में किया गया व्यवहार अभिवृत्ति के अलावा अन्य घटकों से भी प्रभावित होता है।

परिकल्पनों का सत्यापन एवं निरसन–

परिकल्पना संख्या	1(क)	सत्यापित
परिकल्पना संख्या	1(ख)	सत्यापित
परिकल्पना संख्या	1(ग)	सत्यापित
परिकल्पना संख्या	1(घ)	सत्यापित
परिकल्पना संख्या	2(क)	सत्यापित
परिकल्पना संख्या	2(ख)	सत्यापित
परिकल्पना संख्या	2(ग)	सत्यापित

Volume-1, Issue-1 Feburary ISSN: 2348- 6457

परिकल्पना संख्या	2(घ)	सत्यापित
परिकल्पना संख्या	03	सत्यापित

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षः—

प्राप्त परिणामों की व्याख्या एवं विश्लेषण के उपरान्त इस शोध अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष को निम्नलिखित रू से प्रस्तुत किया जा सकता है—

1. प्राथमिक विद्यालयों के महिला शिक्षक एवं पुरूष शिक्षको के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर इस प्रकार है—
   1. शहरी क्षेत्र के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।
   2. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।
   3. शहरी क्षेत्र के अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।

   ग्रामीण क्षेत्र के अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।
2. प्राथमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों एवं पुरूष शिक्षकों के कक्षा—शिक्षण अन्तःक्रिया चर पर अन्तर—
   1. शहरी क्षेत्र के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच शिक्षण अंतःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) (शिक्षक वार्ता प्रतिशत अप्रत्यक्ष—प्रत्यक्ष व्यवहार, शिक्षक अनुक्रिया अनुपात) में सार्थक अन्तर नही है।
   2. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच कक्षा—शिक्षण अंतःक्रिया चर (P.T.T., I/D, T.R.R.) (शिक्षक वार्ता प्रतिशत, अप्रत्यक्ष—प्रत्यक्ष व्यवहार, शिक्षक अनुक्रिया अनुपात) में सार्थक अन्तर नही है।
   3. शहरी क्षेत्र के अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच कक्षा—शिक्षण अंतःक्रिया चर P.T.T. (शिक्षक वार्ता प्रतिशत, I/D (अप्रत्यक्ष—प्रत्यक्ष शिक्षण व्यवहार) T.R.R. (शिक्षक अनुक्रिया अनुपात) में सार्थक अन्तर नही है।

4. ग्रामीण क्षेत्र के अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) एवं महिला शिक्षक (विज्ञान और कला वर्ग) के बीच कक्षा–शिक्षण अंतःक्रिया चर P.T.T. (शिक्षक वार्ता प्रतिशत, I/D (अप्रत्यक्ष–प्रत्यक्ष शिक्षण व्यवहार) T.R.R. (शिक्षक अनुक्रिया अनुपात) में सार्थक अन्तर नही है।

5. प्राथमिक विद्यालयों में महिला शिक्षक (विज्ञान एवं कला वर्ग) तथा पुरूष शिक्षक (विज्ञान एवं कला वर्ग) की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं उनके कक्षा–शिक्षण अन्तःक्रिया चर P.T.T. (शिक्षक वार्ता प्रतिशत, I/D (अप्रत्यक्ष–प्रत्यक्ष शिक्षण व्यवहार) T.R.R. (शिक्षक अनुक्रिया अनुपात) के बीच सार्थक सह सम्बन्ध है।

सन्दर्भ–सूची

1. **Ahluwalia, S.P. (1978) :** Manual for Teachers attitude inventory” (T.A.I) National Psychological Corpiration 4/230, Kacheri Ghat Agara.
2. **Adaval, S.B. (1979 : “**Quality of Teachers**”** Amitabh Prakashan, 3, Bank Road Allahabad.
3. **Arther. L. Gets :** Educational, Psychology, Third Adison the million ko Newyork 1958 P. 614-616.
4. **Bharardwaz Dinesh Chand (1977) : “**Besik Shiksha Siddhant**”** Vinod Pustak Mandir, Agra.
5. **Bhagvatgeeta :** Geeta Press Gorakhpur.
6. **Bhattacharya, S.B. (1978) :** Interaction of Personality and creativity” Ph. D. Education. B.H.U. Varanasi.
7. **Bhargav Mahesh (1997) : “**Modern Psychological Testing and Measurement**”** Har Prasad Bhargav 4/230 Kachari Ghat Agra P. 526-550.
8. **Boring, Lang Field and Welt : “**A History of experimental psychology**”** 1950.
9. **Borg W.R. Kelly, M.L. and Langer, P. (1969) : “**The Relationship between personality and teaching Behaviour before and after in-service micro, teaching” for west Laboratory Educational Research and Development, Barkley California.**”**
10. **Cogan. M.L. (1956) : “**Theory and design of a study of teachers pupil Interaction**”** In Amidon, E.J. and Hough, J.B. (Eds.) Intruduction analysis Theory Research and application, Addison wesly Publishing company Reading Massachusetts.

11. **Dubey, A.K. (2002) : "**A study of Student teachers attitudes towards teaching profession, Values and their class room teaching behaviour Ph.D. Edu. V.B.S. Purvanchal Univesity Jaunpur.

12. **Dubey, R.A. (1981) :** Academic Attainment and moral Student's thought by teaches using direct and Indirect influence, Unpublished Doctoral dissertation Faculty of Education Gorakhpur University, Gorakhpur.

13. **Flanders, N.A. (1970) :** Analysis Teacher Behaviour Addison Wesly Reading Mamssachusetts.

24. **Garrette. H.E. and Worth. R.S. (1981)) : "**Statistics in Psychology and education**"** Vakil and sons Ltd. Vakil House Bomaby.

25 **Gage N.L. (1963) :** Hard book of Researchof Teaching Rand Mondlly (Chicago).

26. **Varnon, P.E. (1953) : "**The Psychologycal trats of teaches**"** Year book of education R.P. 51-52.

27 . **Adaval. S.B. (1979) : "**Qalities of Teachers**"** Amitabh Prakashan, Bank Road Allahabad.

28. **Flanders. N.A. (1970) : "**Anolysig teaching behaviour Addison Wesly Reading Massachusets.

29. **Srivastava**, Dr. D.N. Pandey, Dr. Jagdish – Adhunik Samaj Manovigyan- Prishta-200. :